OPTIMUM POPULATION
(अनुकूलतम जनसंख्या)

अनुकूलतम (optimum) शब्द जीवन के लक्षणों के गुणवत्ता के संदर्भ में लिया जाता है। किसी क्षेत्र की अनुकूलतम जनसंख्या वह है जिससे जीवन की उच्च गुणवत्ता प्राप्त होती है। जीवन की उच्च गुणवत्ता का तात्पर्य प्रत्येक व्यक्ति को प्रयाप्त भोजन, ऊर्जा शुद्ध जल, शुद्ध वायु, प्रयाप्त कच्चा माल जिससे वह अपनी आवश्यकता की सभी चीजों का निर्माण कर सके, स्वास्थ्य सुविधाएँ मनोरंजन की सुविधाए और सांस्कृतिक विकास के समुचित साधन प्राप्त कर सके।

अनुकूलमत जनसंख्या सिद्धान्त का विकास 18 वी० शदी में सर्व प्रथम कैण्टीलान महोदय ने किसी निश्चित क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों के अन्तर्गत उच्चतम जीवन स्तर को बनाये रखने वाली जनसंख्या को अनुकूलतम जनसंख्या कहा। 1848 ई० में JOHN STUART MILL ने प्रिंसिपल्स ऑफ Political इकनौमी नामक पुस्तक में "Theory of optimum well fair" सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

सर्वे के अनुसार :- " अनुकूलम जनसंख्या रहने पर औसत जीवन स्तर ऊँचा होता है, सामुहिक शक्ति की प्राप्ति होती है, पूर्ण रोजगार, लम्बी जीवन प्रत्यासा, उत्तम स्वास्थ्य, मान संस्कृति, सामाजिक एकता और पारिवारिक स्वामित्व की प्राप्ति होती है।"

जी० वी० वर्नर के अनुसार : " अनुकूलतम देश तब उत्पन्न होती है जब सभी को पूर्ण रोजगार मिल जाता है। जीवन स्तर संतोष प्रद होता है। 3500 कैलोरी भोजन प्रति दिन मिल जाता है। आय का 50% से अधिक खर्च नही होता है तथा संसाधनों का उचित दोहन किया जाता है।"

प्रेस्टन क्लाइड (1970) के अनुसार :- " अनुकूलतम जनसंख्या वह है जो एक निश्चित सिमा रेखा में समाहित हो तथा वह संख्या इतनी प्रयाप्त हो जिसमें सभी निवासियों में निरंतर उच्च जीवन स्तर प्राप्त करने के लिये निर्माण क्षमता हो परन्तु संख्या इतनी विशाल भी न हो कि, उसमें समान जीवन स्तर में गिरावट अथवा वातावरण के साथ संयोजन में कमी आ जाय।

अतः हम कह सकते है कि — "किसी प्रदेश, देश, अथवा विश्व की उस मात्रा से है जिससे उपलब्ध संसानों का अधिकतम उपयोग होता है प्रति व्यक्ति आय समुचित हो, सार्वत्र सम्पन्नता हो, तथा जनसंख्या एवं संसाधनों में अनुकूल संतुलन हो।"

इस प्रकार उस देश के उपलब्ध संसाधनों के अनुकूल आदर्श जनसंख्या को ही अनुकूलतम जनसंख्या कहते है। परन्तु आदर्श जनसंख्या का सिद्धान्त स्थिर नही होता है। यह काफी गतिशील होती है। यदि किसी देश की जनसंख्या अनुकूलम बिन्दु से कम होती है तो वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों का अपर्याप्त शोषण होने से प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। ऐसा प्रायः नये देशों की होती है। जनसंख्या की इस दशा को न्यूनतम जनसंख्या (under Population) कहते है। कुवैत इसका अच्छा उदाहरण है। वहाँ के उपलब्ध साधनों की तुलना में जनसंख्या बहुत ही कम है। अतः वहाँ संसाधनो का पूरा शोषण नही हो पाता है। इसके कारण उस देश का पूर्ण विकास नही हो पाया है। इसके विपरीत यदि किसी देश की जनसंख्या इस आदर्श बिन्दु से अधिक है तो प्राकृतिक संसाधनों का अति शोषण होगा, उस देश की प्रति व्यक्ति आय कम हो जाएगी।

Scanned with CamScanner

दूसरे शब्दों में जिस सीमा तक संसाधनों का उपयोग किया जाता है, यह तथ्य इस बात को निश्चित करता है कि वह प्रदेश अधिक अथवा अल्प-संख्या वाला है। कोई भी देश 'अनुकूलतम जनसंख्या' वाला देश उस समय कहलाता है जब उपलब्ध संसाधनों की तुलना में व्यक्तियों की संख्या संतुलित रहती है। अनुकूलतम स्थिति को बनाये रखा जा सकता है यदि नवीन संसाधनों का दोहन अथवा नियोजन के अन्य स्वरूपों का विकास, जनसंख्या में वृद्धि के साथ संतुलन बनाये रखे। यदि जनसंख्या में वृद्धि अत्यधिक हो जाती है तब 'ह्रासमान प्रतिफल नियम' (Law of Diminishing Return) लागू होना आरम्भ हो जाएगा। एक निश्चित बिन्दु तक ही भूमि पर कार्य कर रहे श्रमिकों की संख्या में वृद्धि करने से उत्पादन में सुस्पष्ट वृद्धि कर सकने में समर्थ होते हैं। एक बार अनुकूलतम जनसंख्या की स्थिति आ जाती है, हालांकि उसके और अधिक वृद्धि से उत्पादन में तो वृद्धि हो सकेगी किन्तु यह घटती दर से वृद्धि होगी, इस प्रकार प्रति व्यक्ति उत्पादन में गिरावट होगी। जब अधिक व्यक्ति उस संसाधन आधार पर निर्भर रहते हैं, तब प्रत्येक व्यक्ति की आय कम होती जाती है।

इसके विपरीत, किसी क्षेत्र के सभी संसाधनों को विकसित करने के लिए पर्याप्त व्यक्ति उपलब्ध न होंगे उनका जीवन स्तर नीचा रहेगा, अपेक्षा यदि समस्त संभावित संसाधनों को प्राप्त कर लिया गया हो। इस आधार पर ब्राजील की 14 मनुष्य प्रतिवर्ग K.m. जनसंख्या आज अल्प जनसंख्या (Under population) मानी जा सकती है। किन्तु जब ब्राजील में यूरोपीय लोग बसने शुरू हुए थे, उस समय यह देश अल्प जनसंख्या का देश नहीं था यद्यपि उस समय वहां कम व्यक्ति रह रहे होंगे, क्योंकि, आज दोहन किये जा रहे संसाधन आधार की तुलना में स्थानीय जनसंख्या द्वारा उपयोग में लाये गये संसाधन भी कम रहे होंगे।

अतः एक देश जहाँ कृषि, उद्योग, संचार साधन, व्यापार, वाणिज्य और सामाजिक सेवाएं सभी पूर्ण विकसित हो और देश के सभी संसाधनों को पूर्णतः और समग्र-रूप का उपयोग में लाया जाता है, विकसित देश समझा जाता है।

नये नये संसाधनों के अनुसंधान और उनके दोहन में सुधार और वैज्ञानिक प्रगति के कारण अनुकूलतम, जनसंख्या की मात्रा घटती बढ़ती रहती है। उदाहरण के लिए सहारा में भूमि से जल, खनिज तेल निकालने के तकनीक के प्रयोग से 1950 के बाद से खाद्य उत्पादन के क्षेत्र में विस्तार हुआ, तथा तेल के उत्पादन से आय में वृद्धि के कारण अनुकूलतम जनसंख्या की मात्रा बढ़ गई, इसके विपरित आर्थिक विपन्नता के साथ अनुकूलतम जनसंख्या की मात्रा घटती जाती है। इस प्रकार अनुकूलतम जनसंख्या का सिद्धान्त एक गतिशील सिद्धान्त है।

जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व :—

Scanned with CamScanner

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त का महत्व :—

① इस सिद्धान्त से यह स्पष्ट होता है कि मानव प्रकृति द्वारा शासित नहीं है, बल्कि वह प्रकृति के साथ समायोजन करता है।

② इस सिद्धान्त में प्रति व्यक्ति आय को ही जनसंख्या निर्धारण का आधार माना गया है।

③ यह सिद्धान्त जनसंख्या को नियंत्रित करने पर बल देता है। इससे परिवार नियोजन की सफलता सम्भव है।

④ इस सिद्धान्त में मानव को उत्पादन कर्ता के रूप में माना गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जनाधिक्य या उसकी कमी दोनों उचित नहीं है।

⑤ यह सिद्धान्त प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि पर जोर देता है जिससे राष्ट्र के नागरिकों की समृद्धि सम्भव है।

⑥ यह सिद्धान्त वातावरण के परिवर्तन पर बल देता है जिससे किसी और समाज का संतुलन बना रहता है।

⑦ यह सिद्धान्त जनसंख्या वृद्धि को आर्थिक वृद्धि से जोड़ता है।

अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचनाएँ :—

① रॉबिनसन महोदय ने इस रोचक व निपुर्ण बताते हुए निर्थक बताया है इन्होनें इसकी तुलना उस स्त्री के सौन्दर्य से की है जो आकर्षक तो है, लेकिन उसे परिभाषित करना कठिन है।

② यह सिद्धान्त व्यवहारिक नहीं है। अनुकूलतम जनसंख्या का मापन एक कठिन कार्य है, इसलिये चटर्जी ने कहा है कि इस आकस्मिक और प्रतिक्षण परिवर्तित संसार में वस्तुतः अनुकूलतम जनसंख्या की खोज मृत तृष्णा की भाँति है।

③ यह सिद्धान्त भौतिकवाद पर आधारित है। इस सिद्धान्त में केवल प्रति व्यक्ति आय और उत्पादन पर ध्यान दिया गया है, जो संकुचित दृष्टि कोण है। क्योंकि जनसंख्या केवल आर्थिक आधारों से ही प्रभावित न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सैन्य शक्तियों से भी प्रभावित होती है।

④ यह सिद्धान्त अपने आप में उलझा हुआ है B. Thomas ने कहा है कि यह एक धुंधला और न पकड़ में आने वाला विचार है।

Scanned with CamScanner